रात्रीक्लास ओमशांति 21.10.67

बच्चे और बच्चियां बैठी हैं। इसी विचार से बैठी हैं कि बाबा आया कि आया। बापदादा आया कि आया। .....नाम ही प्रजापिता। शिवबाबा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वो है रुहानी पिता। अब किसकी याद में बैठना चाहिए अर्थ सहित सब बातें बुद्धि में रखनी पड़ती हैं। बाप आते हैं इस रथ पर। ज्ञान तो सबके लिए है। बाप सब आत्माओं के लिए कहते हैं देहअभिमान छोड़ मामेकम् याद करो। वो गाया ही जाता है निराकारी बाप। भगवान निराकार है। यों इनके बच्चे भी निराकार हैं। निराकारी दुनियां से आते हैं। यहां यह शरीर नहीं है। आसुरी गुण होते हैं कलियुगी दुनियां में या मनुष्यों में दैवी गुण होते हैं सतयुगी दुनियां में। यह सब बातें बच्चों की बुद्धि हैं। बच्चे जानते हैं नालेज मिलती है। बाप कहते हैं मनमनाभव मध्याजीभव का मंत्र है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। (कृष्ण) को बाप नहीं कहते। तुम बच्चे किसको भी समझाओ चाहे कोई सन्यासी हो व कोई भी हो। पहले यह मंत्र दो। अच्छी रीति समझाय कर निश्चय कराय लिखो हम बाप के बच्चे हैं। वह ही पतित–पावन हैं और सर्वशक्तिवान भी हैं। बच्चों को अच्छी रीति सिखाना है। कोचिंग देनी है। सब आत्माओं का एक ही बाप है। आत्माएं पुनर्जन्म में आती हैं। सूख्यमवतन(सूक्ष्मवतन) का वार्तावरण(वातावरण) नहीं करना चाहिए। टू मच में न जाना चाहिए। बोलो प्रजापिता तो मनुष्य होगा ना। तुम्हारा भी पिता ठहरा। हम .....ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं। बाप ब्रह्मा द्वारा यह ज्ञान दे रहे हैं। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आया?ब्रह्मा तो चाहिए ना। जबकि शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। ब्रह्मा द्वारा ही रचना होती है....मनुष्य सृष्टि की। फिर उनके अनेक (वर्णों) में आते हैं। प्रदर्शनी में हंगामा होता है। बहुत कठिन है समझाना। अगर समझाना चाहिए तो अलग बिठाना चाहिए। बोलो बाप समझाते हैं संशय न आना चाहिए। इसमें प्रश्न उठ नहीं सकता। बाप सत्य ही बताते हैं। बाकी सब है झूठ। भारत को सच्च खण्ड कहते थे। अब झूठ खंड है। तुम कहते भी हो अच्छी रीति समझना हो तो सात दिन का कोर्स लो। मुसलमान आदि कोई भी हो सबका बाप है न। बुलाते हैं हे पतित–पावन! गांधी भी किसको याद करते थे। याद निराकार को करते हैं। फिर सीता–राम रघुपति राघव राजाराम कह देते हैं। तुमको समझाया है सब भक्त, एक है भगवान। सभी आत्माओं का वह बाप है। बाप को भगवान ही कहा जाता है। यह है मूल बात समझाने की। क्राइस्ट भी देहधारी था। उनके अंदर भी छोटी आत्मा है। यह बातें सन्यासी आदि सुनाय न सके। फादर कहते हैं यह बुद्धि में ठोंक देना है। दुनियां गॉड फॉदर ही कहती है। सुप्रीम फादर कहने से गॉड फादर के लिए ही हो जाता है। नई दुनियां स्वर्ग भारत ही था। वही नई दुनिया का मालिक बनाने पढ़ाते हैं। जास्ती और कुछ समझाने की दरकार नहीं। सन्यासी कब न समझेंगे। उनका दुकान ही खतम हो जाये। सब फालोअर्स भी आ जाये। उन सबको पता है गीता श्रीकृष्ण भगवान की है। तुम समझाते हो कृष्ण में ज्ञान नहीं था। श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिंस ,उनमें सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान कहां से आया?वह आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तुम संगम पर समझाय सकते हो। पुरानी दुनियां को नई बनाने वाला भगवान ही है। लिखना पड़ेगा इस ज्ञान से उतरती कला, उस ज्ञान से चढ़ती कला। लिखना अच्छा होता है। तुम ल.ना. के चित्र निकाल बोलो यह दुनियां स्थापन हो रही है। पुरानी दुनियां बदल रही है। अब यह बनना हो तो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बच्चियां खड़ी हो .....जावे। 10पैसे में तुम स्वर्ग की बादशाही पाय सकते हो। विश्व की बादशाही ले सकते हो। भारतवासी विश्व के मालिक बन सकते हैं। अब बाप को याद करो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। पवित्र जरूर बनना पड़ेगा। मौत सामने खड़ी है। वहां काम कटारी (का) निशान नहीं। निश्चय बुद्धि विजयंति, संशय बुद्धि विनश्यंति। तो बहुतों का.....कर देंगे। दूसरों का कल्याण कर लेते खुद गिर पड़ते हैं। ऐसे भी बहुतों पर ग्रहाचारी बैठती है। .....भी पैसा खलास तो दूसरों का भी खलास। अच्छा, मीठे2 बच्चों को बाप व दादा का याद.....गुडनाइट। बच्चों को नमस्ते। ओमशांति।